३. तृतीय अध्याय: उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के राग |

३.० प्रस्तावना

इस अध्याय के अंतर्गत उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-षाडव जाति के रागों का शास्त्रोक्त विवरण के साथ संकलन तथा उनका परिचय एवं उपलब्ध बंदिशें दी गई है |

३.१ बिलावल थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.१.१ राग : भिन्न रागेश्री

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : पंचम वर्जित तथा आरोह में ऋषभ वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह : सा ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म, ग म रे सा

पकड़ : सा ग म ध नि ध म, ग म रे सा

विशेषता : यह राग भिन्न षड्ज तथा रागेश्री के मिश्रण से बना है। कोमल निषाद का प्रयोग जो रागेश्री में होता है वह कोमल निषाद इस में बिल्कुल नहीं है ।

स्वर विस्तार: सा, ऩिध़ऩिसा, ध़ऩिसाग, गमगरे सा। ध़ ऩि सा ग, मधमग, म ध नि - ध म ग, गमधग म, गम- गरे सा। ध़ऩिसागमध, मधनिधमग, मधनि सां, निध सां, सां नि ध म, धगमनिधम,गम गरे सा। गमधनी सां, निध निसां-, निधनि सां, धनि सांगं मं गं रें सां, सांरें सांसां नि ध, म ध नि ध म ग म ग रे सा।

राग : भिन्न रागेश्री- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हे मोरी नैया पार करो रे । तु करतार रसखान सुख: दाता ।

अंतरा : उमगे न जाने कहा से पाऊ । तुम बिन प्रीत कौन धरे ।

स्थायी

			मध
			हेऽ
निसां ग - म	रे - सा -	ऩिध़ ऩि सा म	ग रे सा ऩि
ऽऽ मो ऽ री	नै ऽ या ऽ	पाऽ ऽ र क	रो ऽ रे तु
३	×	२	०
ध़ ऩि - सा	ग ग म ध	निसां नि ध म	गम रे सा मध
ऽ क ऽ र	ता र र स	खाऽ न सु ख:	दाऽ ता ऽ हेऽ
३	×	२	०

अंतरा

			ग
			उ
म मध निसां नि	सां - सां नि	ध नि सांगं मं	रेंसां निसां निध ध
म गेऽ ऽऽ न	जा ऽ ने क	हा ऽ सेऽ ऽ	पाऽ ऽऽ ऊऽ ऊ
३	×	२	०
म मध निसां नि	सां - सां सां	नि - नि सां	धनी निध ध ध़
म गेऽ ऽऽ न	जा ऽ ने क	हा ऽ से ऽ	पाऽ ऽऽ ऊ तु
३	×	२	०
ऩि सा ग ग	ग म म ध	निसां नि ध म	गम ग रेसा मध '
म बि ऽ न	प्री ऽ ऽ त	कौऽ ऽ न ध	रेंऽ ऽ ऽऽ हेऽ
३	×	२	०

३.१.२ राग : कमलरन्जनी

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : ऋषभ स्वर वर्ज्य तथा आरोह में मध्यम स्वर वर्जित है

जाति : औडव-षाडव

स्वर : सब स्वर शुद्ध

वादी : ध

संवादी : ग

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा ग प [नि]ध- नि सां

अवरोह : सां नि ध- प म ग, प म ग- सा

अथवा सां नि ध- नि ध प- म ग, प म ग- सा

पकड़ : सा ग प, ध नि ध प, म ग, प म ग- सा

विशेषता : यह बिलावल अंग से गाई जाने वाली मधुर रागिनी है। इसमें कोमल निषाद क्वचित अल्हैया बिलावल के ढंग से लिया जाता है। इसका उठान भी बिलावल की तरह ही है । ऋषभ का वर्ज्यत्व इस राग को बिलावल से अलग करता रहता है । आरोह में मध्यम का वर्ज्यत्व तथा आरोह-अवरोह दोनों में धैवत का स्पष्ट प्रयोग यह कमलरंजनी को बिहाग से दूर करता है । क्वचित धैवत को दुर्बल करके बिहाग की छाया दिखाई जाती है । कोमल निषाद अल्हैया बिलावल की तरह 'ध नि ध प', 'मनिधप' इत्यादि संगती में लिया जाता है | 'ग प [नि]ध नि सां' तथा 'सां नि ध - प' इन स्वरावली में भी अल्हैया बिलावल की छटा नज़र आती है |[2] 'प म - गss सा' यह टुकड़ा कमलमनोहरी राग की तरह सुनाई देता है | इस राग में 'ग म - नि ध प - प म गsssसा' इस स्वरावली में बिहागड़ा राग का भास होता है | अंतरे का उठान 'ग प - नि ध नि - सां' इस प्रकार होता है |[3]

स्वर विस्तार: सा ग- सा, सा ग म ग सा, सा म ग प- म ग, प म ग - सा। सा म ग, सा ग - म ग, प म ग, म ग, प ग म ग - सा | सा ग प, ग प म ग सा, प, ग प, ध - प, नि ध प, म ग, ग प म ग, प म ग - सा। सा ग प, ग प [नि]ध - नि सां, सांनिध- - प, मगमनिधप-, धनिप, ध नि सां ध नि प, निप, गमपम, गमग - सा। ग प, [नि]ध नि सां, धनिसां गं सां, धनि सांगं मं गं सां, सां ध नि ध प, म ग, प म ग - सा।[४]

राग : कमलरन्जनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : जावो जावो सखीरी जमुना तीर। इतनी बिनती मोरी प्रभुसो करियो। तुमरे दरस बिन कछु ना सुहावे।

अंतरा : ग्वाल बाल सब भूपत थाड़े। दरशन को सब भूखे प्यासे।

स्थायी

ग - सा ग	प प (नि)ध नि	सां - ध नि॒	प म ग सा
जा ऽ वो जा	ऽ वो स खी	री ऽ ज मु	ना ऽ ती र
०	३	×	२
म ग म नि॒	ध प म ग	ग म प -	ग म ग -
इ त नी बि	न ती मो री	प्र भु सो ऽ	क रि यो ऽ
०	३	×	२
ग प (नि)ध नि	निध निध नि सां	गं सां ध नि॒	ध प मग सा
तु म रे द	रऽ सऽ बि न	क छु ना सु	हा ऽ वेऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

प प (नि)ध नि	सां सां सां सां	सां गं गं मं	गं गं सां -
ग्वा ऽ ल बा	ऽ ल स ब	भू ऽ प त	था ऽ ड़े ऽ
०	३	×	२
गं गं सां नि	ध नि॒ ध प	ग म प म	ग म ग सा
द र श न	को ऽ स ब	भू ऽ खे ऽ	प्या ऽ से ऽ
०	३	×	२

३.१.३ राग : भूपनट

थाट : बिलावल

वर्ज्य स्वर : आरोह में मध्यम तथा निषाद, अवरोह में निषाद वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : सब शुद्ध

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : रात्री का प्रथम प्रहर

आरोह : सा रे ग प ध सां

अवरोह : सां ध प म ग म रे सा रे सा

पकड़ : ग रे ग प ध प म ग म रे सा

विशेषता : यह राग भूपाली तथा नट के मिश्रण से बना है | इस राग में भूपाली में 'सा रे रे ग' तथा 'ग म रे सा रे सा' इत्यादि नट अंग का प्रयोग करनेसे इस राग की रचना हुई है |[६]

राग : भूपनट - द्रुत एकताल

स्थायी : सुन्दर चतुर सुघर नार। बन ठन आई रसिक जिया ललचाई।
अंतरा : चाल चलत मतवारी। ठुमकत मुसकत नाद रिझाई|

स्थायी

सा रेग	रे सा	सा रे	प प	ग रे	ग रे
सु न्दऽ	र च	तु र	सु घ	र ना	ऽ र
०	३	४	×	०	२
ग ग	ग ग	रे रे	ग प	प ध	सां सां
ब न	ऽ ठ	ऽ न	आ ऽ	ई ऽ	ऽ ऽ
०	३	४	×	०	२
सां रेंगं	रें सां	ध प	पध पप	गम गरे	गरे सा
र सिऽ	क जि	या ऽ	लऽ लऽ	चाऽ ऽऽ	ईऽ ऽ
०	३	४	×	०	२

अंतरा

ग प	ध सां	सां सां	सां सां	सां रें	सां -
चा ऽ	ल च	ल त	म त	वा ऽ	री ऽ
×	०	२	०	३	४
सां रेंगं	मं रें	- सां	(सां) सां	- ध	- प
ठु मऽ	ऽ क	ऽ त	मु स	ऽ क	ऽ त
×	०	२	०	३	४
पध पम	गम गरे	गरे सारे	७		
नाऽ ऽऽ	दऽ रिऽ	झाऽ ईऽ			
×	०	२			

३.२ कल्याण थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.२.१ राग : नूर सारंग

थाट : कल्याण

वर्ज्य स्वर : आरोह में ‘ग, ध’ तथा अवरोह में ‘ग’ स्वर वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : मध्यम स्वर तीव्र बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सारे , मंप, नि, सां

अवरोह : सां निधप, मं, रे, ऩि सा

पकड़ : रे, मंप, नि, धप, मंप रे, मं रे, ऩि सा

विशेषता : सारंग का यह एक अप्रचलित प्रकार है | इस के स्वरुप को लेकर मतभेद देखने को मिलते हैं | इस राग के अवरोह में कई बार ‘ध’ को छोड़कर ‘नि प’ संगती से अवरोह किया जाता है | इस राग में निषाद स्वर पर बार-बार ठहराव किया जाता है | ‘रे, मंप, धप, निधप, रेप मंप’ इत्यादि स्वर संगती द्वारा श्यामकल्याण, कामोद राग की छाया समक्ष प्रकट होती है, परन्तु गंधार तथा शुद्ध मध्यम के वर्जत्व के कारण यह छाया भी दूर हो जाती है | इस राग के निकटवर्ती रागों में ‘वैजयंती’ राग है | परन्तु ‘वैजयंती’ में धैवत वर्ज्य होने के कारण यह दोनों राग एक दुसरे से अलग प्रतीत होते हैं | इस राग की बंदिश में एकताल में ‘सावरो कान मोहे सतावे’ है |

इस राग के स्वरुप को लेकर विद्वानों में मतभेद दिखाई देता है | कुछ 'सरेमपनिसां-सांनि̲पमरेग̲रेसा अथवा रेग̲सा' इस प्रकार स्वरुप मानते हैं और मधमाद तथा बरवा के संयोग से बना मिश्रित रूप मानते हैं; जो 'लंकदहन' से बहुत साम्य रखता है | परन्तु ग्रंथों में तथा ज्यादातर विद्वानों द्वारा तीव्र मध्यम तथा शुद्ध निषाद वाले प्रकार को ही मान्यता है |

स्वर विस्तार :- सा, ऩि-, सा-, ऩि-ऩ़-, म़ं-प़-, ऩि-,सा-, सा, रे-, मंरे-, पमंरे-, ऩि-, सा-, सा, रे, मंप, धप, धमं, प, नि, धप, मं, प, नि-, सां-, रें, नि-, सां निध-प, मंप, मं, रे, परे, सरे, ऩि-, सा |

नूर सारंग-झपताल (सरगम गीत)

स्थायी

प -	म॑ प ध	म॑ प	रे - रे
सा ऩि	प़ ऩि सा	रे -	रे ऩि सा
रे म॑	प - नि	सां रें	नि - सां
नि प	ध म॑ प	म॑ -	रे ऩि सा

अंतरा

म॑ प	नि - नि	सां नि	सां - सां
रें म॑	पं - म॑	रें सां	रें नि सां
प नि	सां - रें	नि सां	नि - प
म॑ प	ध म॑ प	म॑ -	रे ऩि सा
×	२	०	३

नूर सारंग-एकताल (सरगम गीत)

स्थायी

रे म॑	प ध	म॑ प	ऩि सा	रे सा	ऩि सा
प़ ऩि	सा रे	सा सा	रे म॑	प ध	म॑ प
प नि	सां रें	सां सां	पध म॑प	रे सा	ऩि सा
×	०	२	०	३	४

अंतरा

प प	नि नि	सां -	सां सां	- रें	सां सां
नि नि	सां सां	रें म॑	पं रें	- रें	सां नि
नि सां	रें सां	नि रे	म॑ प	रे रे	सा सा
×	०	२	०	३	४

३.३ खमाज थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.३.१ राग : नारायणी

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : गंधार स्वर वर्ज्य तथा आरोह में निषाद स्वर वर्जित है

जाति : औडव-षाडव

स्वर : कोमल निषाद बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : सा

संवादी : प

गायन समय: मध्यरात्री (रात्रि का दूसरा प्रहर)

आरोह : सा रे म प, ध, सां

अवरोह : सां नि॒ ध, प, म रे सा अथवा सां, नि॒ ध प, रे म प नि॒ ध प, म प म, रे सा

पकड़ : रे म प नि॒, ध प, म प म, रे सा, नि॒ ध़ सा और रे म प नि॒ ध म प नि॒ ध प, म रे म रे सा

विशेषता : यह एक दक्षिणात्य राग है । इस राग को दो थाटों के अन्तर्गत माना गया है । एक खमाज थाट तथा दूसरा काफी थाट । हम यहाँ खमाज थाट युक्त नारायणी की चर्चा करेंगे । इस राग में दुर्गा तथा सोरठ का मिश्रण है । जैसे 'सा रे म प ध सां' आरोह दुर्गा है । तथा 'सां नि॒ ध प म रे म रे सा' अवरोह सोरठ का है | तथा राग स्वरुप में 'रे म प नि॒ ध म प नि॒ ध प म रे' यह सोरठ के स्वर-समूह स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं | समप्रकृतिक राग सुरमल्हार है । कुछ गुणिजन वादी ऋषभ भी मानतें है । दक्षिण के ग्रन्थ 'राग लक्षण' में इसे 'हरिकाम्भोजी' मेल के अन्तर्गत माना है । 'सा रे सा नि़॒ ऽ ध़, म़ प़ ध़ सा' यह इस राग का

अपना निजी स्वर समूह है। 'सा रे म प, म रे, म रे सा' इस स्वरावली से सारंग का आभास होता ज़रूर है परन्तु 'म रे' स्वर की मिन्ड से सारंग दूर होता है। म रे म रे की संगती इस राग में बहुत महत्वपूर्ण है | यह 'म रे' की संगती न तो सारंग की है, क्योंकि इसमें मिन्ड है | वैसे ही यह न तो सोरठ की है, क्योंकि सोरठ में 'रे म प नि॒ ध प म रे' में 'म रे' की दीर्घ मिन्ड के बाद वापस 'म रे ऩि - सा' का प्रयोग होता है | इसके विपरीत नारायणी में इस संगती के पश्चात सिधे षड्ज पर न्यास किया जाता है | राग दुर्गा में 'म रे' की संगती के बाद 'ध़ सा' 'रे ध़ सा' यह स्वर लिए जाते हैं |[९] "अप्रकाशित राग (ज. दे. पत्की) - तीसरा भाग" के अन्तर्गत आरोह में निषाद दुर्बल बताया गया है । इस राग में "सा, रे म प नि॒, ध प; नि॒ ध, म प नि॒ ध प" यह स्वर समुदाय इस राग में बार-बार आता है । जिससे सूरदासी मल्हार की छाया दिखाई देती है । परन्तु सूरदासी मल्हार यह मल्हार अंग से तथा नारायणी दुर्गा अंग से गाते हैं । सूरदासी में धैवत अत्यल्प है तथा नारायणी में धैवत आवश्यक स्वर है ।[१०] "स्व. पं. विनायकराव पटवर्धन जी ने राग विज्ञान (छटवां भाग)" के अन्तर्गत इस राग को सारंग अंग का माना है, इन्होंने भी आरोह में निषाद वर्ज्य मानकर औडव-षाडव जाती का राग माना है। इन्होंने ऋषभ को वादी माना है।[११] भातखंडे जी के मतानुसार भी ऋषभ वादी तथा पंचम संवादी है। भातखंडे जी का कहना है की इस राग में सारंग का आभास जरूर होता है, परन्तु आरोह में निषाद का वर्ज्यत्व तथा धैवत का अस्तित्व के कारण सारंग की छाया दूर होती है।[१२]

स्वर विस्तार: सा ध़ सा, सा ध़-ध़ प़, म़ प़ ध़ सा। ध़ सा रे, रे सा, रे ध़ सा, ध रे सा, ऩि॒ ध़ प़, सा ऩि॒ ध़ प़, म़ प़ ध़ सा। सारेमप, मप, मपधपम, रेमपधप, धम, रेमपध नि॒ ध प, म नि॒ ध प, नि॒ ध प, सां नि॒ ध प, रे म प नि॒ ध॒ प, नि॒ ध म प, नि॒ ध प, रे म प नि॒ ध प, मपम, रे सा | सा

रेमपनिधप, मपधसां, धसांरेंमंरेंसां, धसां नि-ध-प, रे म प नि ध प, म नि ध प, मपम, रे म प नि ध प, मपम, रे सा |[१३]

राग : नारायणी - एकताल (विलंबित)

स्थायी : सदन अत मौंद मौंदन सहेली आई रसिक मद भरी।
अंतरा : गति 'अमर' मान भरी अति हरखत निरख मन भरी।|

स्थायी

			सा	रे म	प ध
			स	द न	अ त
×	०	२	०	३	४
नि॒ -	प ध	रे म	प ध	म रे	(नि॒)ध़ सा
मौं ऽ	द मौं	ऽ द	न स	हे ली	आ ई
×	०	२	०	३	४
रे नि॒	सा म	रे प	प		
र सि	क म	द भ	री		
×	०	२	०		

अंतरा

			म	प ध	सां ध
			ग	ति अ	म र
×	०	२	०	३	४
सां -	सां रें	नि॒ -	ध म	प ध	सां ध
मा ऽ	न भ	री ऽ	ऽ ग	ति अ	म र
×	०	२	०	३	४
सां -	सां रें	नि॒ सां	सां सां	रें मं	रें सां
मा ऽ	न भ	री ऽ	अ ति	ह र	ख त
×	०	२	०	३	४
नि॒ ध	प ध	म प	प [१४]		
नि र	ख म	न भ	री		

३.३.२ राग : प्रतापवराली

थाट : खमाज

वर्ज्य स्वर : आरोह में गंधार तथा निषाद, अवरोह में निषाद

जाति : औडव-षाडव

स्वर : सब शुद्ध स्वर

वादी : रिषभ

संवादी : पंचम

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा रे म प ध सां

अवरोह : सां ध प म ग रे ग सा

पकड़ : रे, म प, ध प मप ध सां, पध पम गरे गसा

विशेषता : इस राग को कर्नाटक पद्धति से लिया गया है । यह राग झिंझोटी राग के पास का राग है, झिंझोटी राग में कोमल निषाद है, जो इस राग में नहीं लिया जाता ।[१५]

वादी-संवादी के विषय को लेकर कुछ गुणीजन 'म सा' मानते हैं | इसमें सभी शुद्ध स्वर लगने के कारण इसे बिलावल ठाट का भी मानते हैं | इस राग में दुर्गा राग कि भांति 'ध म रे प' स्वर संगती नहीं ली जाती | कुछ गुणीजनों का मानना है की राग मांड में निषाद वर्ज्य करने से इस राग की रचना हुई है | न्यास के स्वर षड्ज, मध्यम तथा पंचम है ।[१६] तथा रिषभ पर बार-बार न्यास होता है; रिषभ वादी एवं ग्रह स्वर भी है ।[१७] इस राग के समीप के रागों में राग दुर्गा (बिलावल थाट), अरबी (आरोह: सा रे म प ध सां, अवरोह: सां नि ध प म ग रे सा), नारायणी इत्यादि है | दुर्गा

राग में गंधार नहीं है तथा राग अरबी के अवरोह में निषाद का थोड़ा सा(कण के रूप में) प्रयोग होता है | वैसे ही राग नारायणी में अवरोह में कोमल निषाद लिया जाता है, तथा गंधार सम्पूर्ण वर्ज्य है |[१८]

स्वर विस्तार : ध़ ध़सा–ध़सा ध़प़ प़ ध़ सा रे, सा रे म ग रे,ग सा, रे प म प, प म ग रे, धध प- म ग रे, सां ध प, धध सांरें धसां धप मग रे, ग सा ।

ध़ ध़ सा रे म प, म प ध प, ध प म, प म ग रे, सा रे मम ग रे, सा रे म ग , रे रे म प, मम पध धप मप ध सां ध सां, सां रें, रें ध सां, ध सां रें मं गं रें, गं रें गं सां, रेंरें सां ध सां रेंसां ध प, मग रेम पध प, ध प म ग रे, ग सा ।[१९]

राग : प्रतापवराली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : हमसे नाही बोले सजनवा, कैसे समझाऊँ तोहे मनहरवा |

अंतरा : जादू डारके ले गयो चितवन, फिर नहीं आये मोरे पियरवा |

स्थायी

मप धसां ध प	म गरे ग सा	रे - म प	मप धप मग रे
हऽ मऽ से ऽ	ना ऽऽ ही ऽ	बो ऽ ले स	जऽ नऽ वाऽ ऽ
०	३	×	२
ध़ सा रे म	गरे ग सा -	म प ध सां	धप मग रेग सा
कै से स म	झाऽऽ ऊँ ऽ	तो हे म न	हऽ रऽ वाऽ ऽ
०	३	×	२

अंतरा

म - प ध	सां ध सां -	सां रें मं गंरें	गं सां रेंध सां
जा ऽ दू डा	ऽ र के ऽ	ले ऽ ग योऽ	चि त वऽ न
०	३	×	२
मं गंरें गं सां	रें सां ध प	म गरे म प	म गरे ग सा २°
फि रऽ न हीं	आ ऽ ये ऽ	मो ऽऽ रे पि	य रऽ वा ऽ
०	३	×	२

राग : प्रतापवराली - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : मोरे मन्दर आवो जी, आवो जी महाराज | तुम बिन तरसे अखियाँ |

अंतरा : आवन कहें गये अजहूँ न आये | बेगी दरस देहो रसिया |

स्थायी

			रे
			मो
म प ध प	ध - - पम	गरे सा रेम गरे	रे - - रे
रे म न्द र	आ ऽ ऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ वोऽ ऽऽ	जी ऽ ऽ आ
३	×	२	०

म प - म	प - - -	मप धसां धसां धप	मग रे रे रे
वो जी ऽ म	हा ऽ ऽ ऽ	राऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽ ज तु
३	×	२	०
प ध सां -	धसां रेंसां ध म	म प धसां धप	मम गरे सा- रे
म बि न ऽ	तऽ रऽ से ऽ	अ खि ऽऽ ऽऽ	याँऽ ऽऽ ऽऽ मो
३	×	२	०

अंतरा

ध म प ध	सां सां सां सां	ध सां रें सां	धप म प -
आ ऽ व न	क हें ग ये	अ ज हूँ न	आऽ ऽ ये ऽ
३	×	२	०
प म प ध	सां धसां रेंसां ध	म - मप धसां	धप मग रेसा रे [२१]
बे ऽ गी द	र सऽ ऽऽ दे	हो ऽ रऽ सिऽ	याऽ ऽऽ ऽऽ मो
३	×	२	०

३.४ भैरव थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.४.१ राग : तिलंग भैरव

थाट : भैरव तथा खमाज से मिश्र मेल

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, धैवत तथा अवरोह में धैवत वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद, एवं कोमल रिषभ

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रातःकाल

आरोह : सा ग म प नि सां

अवरोह : सां, नि प, म ग, म रे, रे सा

पकड़ : ग म प सां नि सां नि प म-, गमप ग म रे सा

ग म - प नि - सां नि - प म - ग म रे - सा

विशेषता : यह एक अल्प प्रचलित भैरव का एक प्रकार है। पूर्वांग में 'सा रे, ग म रे सा, अथवा 'सा रे, ग म प, ग म रे सा' इस प्रकार आरोह में भैरव अंग दिखाते हुए कुछ गुणिजन आरोह में रिषभ का प्रयोग करते हैं। इस राग की उत्पत्ति तिलंग तथा भैरव राग को मिलाने से हुई है। इस राग के समिश्रण में आरोह में तिलंग तथा अवरोह के उत्तरभाग में तिलंग एवं पूर्वांग में भैरव (प म - ग म रे - सा) है। इस राग में अवरोह में गंधार 'गमरे' तथा 'मगरे' इन दोनों प्रकार से प्रयुक्त होता है।

स्वर विस्तार : सा रे रे सा, ऩिसा - ऩि -प़, प़ ऩि सा। रेरेसाऩिसाऩिप ऩि सा, गम पम ग मरे सा। ऩिऩिप़म़प़ऩिसा, ग म, सा ग म, प़ ऩि सा ग म, ऩि सा, ग, सा ग म, म प, ग म, गमप गमरे रे सा, ऩिसागगरेसाऩिसागम प-, गमप, सागमप, गमप- नि प, निमप, ग म, गमपनि, मपनिप गम,गमप-गम-रे-सा। गमरेसानिसाग म प, ग म प नि प, निनिपनिमप निसां निप,ग-म- पनीसां - नि - प, ग म ग, गमपनिसां - रें रें सां, रेंरेंसांनिसां गं मं रें रें सां, निसां, निप मप, गमप ग म रे रे सा।[22]

राग : तिलंग भैरव - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : विघन हरन गौरी के नन्दन, पूरन करो सब बिगड़े काज।
अंतरा : एक दन्त दयावंत चतुर भुज, हमरी अरज सुन लीजे महाराज।

स्थायी

प सां नि सां	नि॒ नि॒ प प	ग म प म	रे॒ - सा सा
वि घ न ह	र न गौ ऽ	री ऽ के ऽ	न ऽ न्द न
०	३	×	२
प म ग म	रे॒ - सा सा	ग म पनि सां	नि॒ प ग म
पू र न क	रो ऽ स ब	बि ग ड़ेऽ ऽ	का ऽ ज ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग ग म प	नि॒ प नि नि	सां - गं मं	रें॒ रें॒ सां सां
ए ऽ क द	ऽ न्त द या	वं ऽ त च	तु र भु ज
०	३	×	२
सां सां नि॒ प	म म ग म	गम पग मम गम	रे॒ - सा -[२३]
ह म री अ	र ज सु न	लीऽ ऽऽ ऽजे महा	रा ऽ ज ऽ
०	३	×	२

३.४.२ राग : कमलमनोहरी

थाट : भैरव

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, धैवत तथा अवरोह में ऋषभ वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : धैवत कोमल तथा बाकी सब स्वर शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रातः काल

आरोह : सा ग म प नि सां

अवरोह : सां, नि ध॒, प म, ग प म, ग सा

पकड़ : गमपनिसांनिध॒, प, मप, म, ग सा

विशेषता : मेलकर्ता १५ मायामालवगौड़ मेल से उत्पन्न कर्णाटक पद्धति का राग है । यह एक अल्प प्रचलित राग है । 'भैरव थाट के राग' अंक, संगीत कार्यालय (हाथरस) लेखक 'वसंत' ने इसे षाडव-षाडव जाति का राग माना है । उन्होंने फ़क्त रिषभ को वर्ज्य बताया है । भैरव का प्रकार होने से इस राग में धैवत आन्दोलित होता रहता है । इस प्रकार के आन्दोलन से; आरोह में 'रेध' वर्ज्य होने से बिहाग राग की जो छाया दिखाई देती है वह दूर हो जाती है । उत्तर भारत में इस राग को प्रचलित करने का श्रेय ग्वालियर के पं. बालाभाऊ उमडेकर को जाता है ।[२४] श्री के. सुब्बाराव के अनुसार यह राग बिहाग तथा भैरव का मिश्रित रूप है; तथा दक्षिण में इस राग को २७ मेलकर्ता सरसांगी में रखा गया है ।[२५]

स्वर विस्तार : सा- - ऩि ध॒ - प़, म़ प़ ऩि - - सा, ग म ध॒ - - प, म प -ग, म पम ग सा। ऩिसागगसाऩिसागमप, गमप, ग म ध॒- प, म प ग म, सा ग म ध॒ - प-, ध॒ध॒पमप-ग, म, पम ग सा। ऩिसागगसाऩिसागमपनि-ध॒- प, गमपनिसां- - निसां- - निध॒ - - प, ध॒ध॒पमप ग म ध॒ - प, म प गम - गसा। सागमप, गमप नि सां -, निसांगंमंगंसां, गंगंसांनिसांनि - ध॒ - प, ध॒ म प ग मप ग मग सा।[२६]

राग : कमलमनोहरी - त्रिताल (सरगम गीत)

स्थायी

ध॒ ध॒ प म	प - ग म	प - ग म	ग - सा -
ऩि सा ग म	प नि सां नि	ध॒ प म प	ग म ग सा
०	३	×	२

अंतरा

म प ग म	प नि सां -	सां गं मं गं	सां नि सां -[२७]
सां नि ध॒ प	ध॒ ध॒ म प	ग म प म	ग - सा -
०	३	×	२

३.४.३ राग : भवमत भैरव

थाट : (भैरव, खमाज तथा मारवा थाट) मिश्र मेल

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, पंचम तथा अवरोह में निषाद वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : रिषभ तथा निषाद कोमल एवं दोनों मध्यम बाकी सब शुद्ध

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : प्रात:काल

आरोह : सा ग म ध नि॒ सां

अवरोह : सां ध मं म, ग म, प, ग रे॒ सा

पकड़ : ध नि॒ सां ध मं म, ग, म प, म प ग रे॒ सा

विशेषता : इस राग की संकल्पना पं.कुमार गन्धर्व द्वारा की गई है| यह अल्प प्रचलित भैरव का प्रकार है; जिसमें भैरव, ललित, भटियार, रागेश्री तथा विभास इत्यादि का आभास होता है । 'ध़ नि॒ सा रे॒ सा' में अहीर भैरव, 'धमंम, ममंम' इन स्वर संगती में ललित तथा 'गमधनि॒सां', 'मधनि॒सां' स्वर संगती में रागेश्री तथा धमंम, मपगरे॒सा में भटियार इत्यादि रागों की छाया आती है । अवरोह में पंचम का प्रयोग सर्वदा शुद्ध मध्यम के साथ ही किया जाता है - जैसे की मपग, धमंम, प इत्यादि | कुमार गन्धर्व जी ने स्वरचित 'अनूपरागविलास' नामक पुस्तक में इस राग का विवरण देते हुए इसे 'धुनउगम' राग बताया है ।

स्वर विस्तार : सरे̱रे̱सा, नि़̱ सा ध़, म़ ध़ नि़̱ सा। ध़नि़̱सारे̱-सा, ग म मं म, प-मप-, ग, पगम, पगरे̱सा। साग, सगमध, गमध- मं म, प-ग रे̱ सा। गगरे̱सानि़̱सागमध-,ध मं म, गमध-, नि̱ सां, धनि̱सां-रें̱सां-, नि̱सांसां, धनि̱सां, ध मं म, ग म प मप ग रे̱ सा। (पं. कुमार गन्धर्व द्वारा गया हुवा राग स्वरुप : सा ग, सा ग म प, म ध मं म, ध - मं म, प - ग रे̱ सा, सा ग म ध मं म, म ध नि̱ सां, सां ध मं म प - ग रे̱ सा, ग रे̱ सा, ध मं म प, ग रे̱ सा, धध नि̱सां नि̱सां रें̱ रें̱ सां नि̱ सां ध मं म, प ग रे̱ सा)|[२८]

राग : भवमत भैरव - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : कंथा रे जानू जानू, रे जानू दरस बिन तोरे, सुझत कछु नाही ।
अंतरा : बिदेस गयो जो तु पतिया नाही भेजो, जो है तू बता मोहे तो सुझत कछु नाही ।

स्थायी

			सा
			कं
ग मध -मं म	म - म -	, गप मप म	पग रे़ सा ग
था रेऽ ऽजा नू	जा ऽ नू ऽ	, रेऽ ऽऽ जा	नुऽ ऽ ऽ द
३	×	२	०
रे़ सा ग म	गम ग म धनि़	सां धमं म मप	पग रे़ सा सा
र स बि न	तोऽ ऽ रे ऽसु	झ तऽ ऽ कछु	नाऽ ऽ ही कं
३	×	२	०

अंतरा

			ध
			बि
मं म ध नि़	सांनि़ धनि़ सां ध	नि़ सांगं रें़ सां	रें़ - सां रें़
दे स ग यो	जोऽ ऽऽ तु प	ति याऽ ना ही	भे ऽ जो जो
३	×	२	०
सां ध नि़सां नि़सां	ध मं म सा	ग म -प मप	पग रे़ सा सा[२९]
हे तू बऽ ताऽ	मो हे तो सु	झ त ऽक छुऽ	नाऽ ऽ ही कं
३	×	२	०

३.५ मारवा थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.५.१ राग : अरुण शंकरा / मालिन

थाट : मारवा

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, मध्यम तथा अवरोह में मध्यम

जाति : औडव-षाडव

स्वर : ऋषभ स्वर कोमल बाकि सब शुद्ध स्वर

वादी : ग

संवादी : नि

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा ग प, नि ध सां

अवरोह : सां नि प, ध प, ग प ग, रे सा

पकड़ : ग प नि ध सां नि, प , ग प ग, रे सा

विशेषता : एसा प्रतीत होता है की राग शंकरा में ऋषभ कोमल किया गया है । इस राग को कोई 'मालिन' अथवा 'मालिनी' राग भी कहते हैं। क्वचित 'पनिधसांनिप' तथा 'सां नि ध- - प' इस प्रकार धैवत का वक्र रूप से अथवा मिंड युक्त प्रयोग होता है; प्राय; आरोह-अवरोह में यह वर्ज्य किया हुआ भी दिखाई देता है | इस राग में 'सा प' की संगती ली जाती है । इस राग में निषाद स्वर एक महत्त्व पूर्ण न्यास स्वर है | 'गपगरेसा' इस स्वरावली से जैताश्री सामने आता है, परन्तु जैताश्री में धैवत कोमल होने से यह अलग दिखाई देता है | इस राग के उत्तरांग में कोमल रिषभ द्वारा शंकरा का आभास दूर होता है |[30]

कभी-कभी शंकरा की तरह धैवत को आरोह-अवरोह में छोड़ दिया जाता है| वैसे ही ‘प नि ध सां नि - -‘ ऐसे निषाद पर न्यास करके आगे बढ़ते हैं | यह एक कर्णप्रिय मधुर राग है | यह बहुत कम सुनने को मिलता है |[३१] इस राग की रचनाएँ : जाने न दुगी पिया मोरे - झूमरा - विलंबित ख्याल, निकसी चाँदनी बांकी - त्रिताल - मध्यलय | काहे सजनवा जाय बिदेसवा - विलंबित झपताल |

स्वर विस्तार : सा ऩि प़, ऩि ध, सा ऩि प़, प़, ऩि सा, सा ग, ग प, ग प, ग रे सा, ऩि सा ग, ग प ग, सा ग प, प ग प ग रे सा । ऩिसागप, सा- ग प, पगरेसा, साप गप, गप नि-प, पग, पगरेसा । गगरेसाऩिसाऩिप धप गप नि, ग प सां नि, प नि ध सां नि, नि प, ग प, धप गप ग, रे सा, सा ऩि प़, सा ऩि सा ग, गप, गप ग, रे सा । ग प नि ध सां, नि सां ग रें सां, गं पं गं रें सां, सां रें सां नि, प नि ध सां नि प, धप गप ग रे सा सां नि, नि प ग प ग रे सा ।[३२]

राग : अरुण शंकरा - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : काहे छिनी मोसे मोरी गगरिया, अब ना सतावो मोहे कन्हैया ।

अंतरा : साँझ भई घर जाने दे हो रसिया, बड़ी कठिन गैल पड़ू तोरे पैंया|

स्थायी

ग प नि ध	सां नि प प	ग - ग प	ग रे̱ सा -
का ऽ हे ऽ	छि नी मो से	मो ऽ री ग	ग रि या ऽ
३	×	२	०
ऩि सा ग प	नि नि सां -	नि - प प	धप गप गरे̱ सा
अ ब ना ऽ	स ता वो ऽ	मो ऽ हे क	न्हैऽ ऽऽ याऽ ऽ
३	×	२	०

अंतरा

प - सां सां	निसां रे̱ं सां सां	सां गं गं पं	गं रे̱ं सां -
साँ ऽ झ भ	ईऽ घ र ऽ	जा ने दे हो	र सि या ऽ
३	×	२	०
सां गं रे̱ं सां	निध सां नि प	नि प ग प	ग - रे̱ सा [३३]
ब ड़ी ऽ क	ठिऽ न गै ल	प ड़ू तो रे	पैं ऽ या ऽ
३	×	२	०

३.६ काफ़ी थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.६.१ राग : पटकाफ़ी

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : धैवत

जाति : औडव-षाडव अथवा षाडव

स्वर : गंधार स्वर कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : रात्रि का प्रथम प्रहार

आरोह : सा, ग॒, म प, नि सां

अवरोह : सां नि प, मप,ग॒ रे, सा ऩि सा

पकड़ : ग॒ म प नि सां, नि प, प म ग॒ रे, रेग॒ मग॒ रे सा

विशेषता : इस राग में पटदीप तथा काफी का मिश्रण है |

स्वर विस्तार: सा, ऩिसा, ग॒रेसा, रेग॒मप, मप, म प ग॒ रे, रे ग॒ म प ग॒ रे, प, ग॒ रे, म ग॒ रे सा, सारे ऩिसा ऩि, प़ ऩि सा, ग॒ म प नि, प नि सां -, सां रेंरेंसांनिसां, रें सां नि प, म प नि सां, ग॒ं रें सां,नि सां, नि प, म प, ग॒ रे, रे ग॒ म प, ग॒ रे, सा ऩि सा।

राग : पटकाफ़ी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : साजन नाही आए मोरे घर, करत मोसे झूठी बतियाँ |
अंतरा : सौतन के संग प्रीत किन्ही, तड़पत रहे नादपिया ||

स्थायी

गम पनि सां नि	प ग - म	प - प मग	रेग - म ग
साऽ जऽ ऽ न	ऽ ना ऽ ही	आ ऽ ये ऽऽ	ऽऽ ऽ मो रे
०	३	×	२
रे -सा सा ऩिसा	रेग मप म प	गम पनि सां रें	(सां) निसांनि पनिप पग
घ ऽऽ र कर	तऽ ऽऽ मो से	झूऽ ठीऽ ब ति	याँऽ ऽऽऽ ऽऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

म प नि सां	रें - गं रें	रें गं मंगं रें	सां रेंनि सां निप
सौ ऽ त न	के ऽ सं ग	प्री ऽ ऽऽ त	कि ऽऽ ऽ ऽन्ही
०	३	×	२
पम ग रे रे	रेग मग रे सा	गम प नि नि	नि निसांनि पनि पमग [३४]
तड प त ऽ	रऽ ऽऽ हे ऽ	नाऽ ऽ द ऽ	पि याऽऽ ऽऽ ऽऽऽ
०	३	×	२

३.६.२ राग : सामंत सारंग

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : गंधार स्वर आरोह-अवरोह में तथा आरोह में धैवत स्वर

जाति : औडव-षाडव

स्वर : आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद स्वर बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय: दोपहर

प्रथम प्रकार

आरोह : सा, रेम, रेप, नि , सां

अवरोह : सां नि̱ प, म नि̱ ध प, म रे, सा

पकड़ : सा, ऩिसा, रे, मप, मनि̱धप, मरे, सा

द्वितीय प्रकार

आरोह : सा रे, म पनि , सां

अवरोह : सां नि̱ प, म ध प, म रे, सा

पकड़ : पमधप, मरे, सारे, ऩि, सा, रे

विशेषता : सारंग का यह एक अप्रचलित प्रकार है | इस राग में सारंग के साथ थोड़ा सा राग देस का मिश्रण है | इस राग को दो प्रकारों से गाया जाता है | दोनों प्रकारों का चलन समान होते हुवे भी फ़क्त धैवत के प्रयोग

का फर्क है | इस राग का पूर्णत: चलन वृन्दावनी सारंग जैसा ही है, फर्क इतना है की इस राग में प्रथम प्रकार के अंतर्गत अवरोह करते समय बीच-बीच में 'पमनिधप' तथा (कभी-कभी 'सां, निधप; हाला की 'सां नि ध प' इस प्रकार धैवत का सरल प्रयोग ज्यादातर कभी नहीं किया जाता), रे, मपनिधप, मप, धप, मरे' इस प्रकार धैवत का प्रयोग करते हैं तथा दुसरे प्रकार के अंतर्गत 'पमधप, म, रेसा' अथवा 'मधप, म, रेसा' इस प्रकार 'मध' संगति से धैवत का प्रयोग किया जाता है | पारम्परिक बंदिशों में - मध्यलय त्रिताल में 'साची कहत वाको कोऊ न माने' तथा एकताल विलंबित में 'एरी माई पिया के मिलबे को' इत्यादि प्रचार में दिखाई देती है |[३५] इस राग में देस तथा सारंग का अंग जो दिखाई देते हैं वो इस प्रकार है - देस- 'रे म प नि ध प - प ध प - म रे' तथा 'म रे - म प - नि सां' | सारंग - 'ऩिसा - रे - म रे - म प - म - रे - सा |[३६] इस राग के स्वरुप को लेकर मतभेद है, कारण कही भी इस राग के स्वरुप का ठोस वर्णन नही प्राप्त होता है | वृन्दावनी सारंग के अंतर्गत 'प म नि ध प,' 'म प नि ध प,' अथवा 'म प ध नि प म रे' इस प्रकार शुद्ध धैवत का प्रयोग होने से देश राग की छाया दिखाई देती है वह 'प म रे, रे म प म रे, ऩि सा' इस सारंग के अंग द्वारा नष्ट होती है | इस के समप्रकृतिक राग में सुरमल्हार राग है; परन्तु सुरमल्हार यह मल्हार अंग तथा सामंतसारंग यह सारंग अंग का राग होने से तथा चलन भेद, वादी संवादी भेद तथा गायन समय भेद इत्यादि बातों से दोनों एक दुसरे से भिन्न दिखाई देते हैं |[३७]

स्वरुप (प्रकार-१ 'पमनिध') (प्रकार-२ 'पमधप') : सा, ऩि सा, रे, मरे, पमरे, सरे, ऩि, सा, रे म प म, म नि ध प (म ध प), म रे, ऩि, सा | सा ऩि प़, म़ ऩि ध़ प़ (म़ ध़ प़) म़ प़, ऩि सा, रे प म , नि प, नि सां, रें सां, नि प, म प, म नि ध प (म ध प), म रे, म प नि सां, सां नि प, म प नि ध प नि प म रे, सारे, ऩि, सा |[३८]

राग : सामंत सारंग - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : साँची कहत वाको कोउ न माने झूठी जग पतियां येही सबन की|

अंतरा : अपने खुशामद बारा कीजे, निरंकार कोही पहचाने, फरकत बदरा येही सबन की ||

स्थायी

, ध प ध	प म रे सा	(नि)सा नि़ सा रे	म - प -
, साँ ची क	ह त वा को	को ऽ उ न	मा ऽ ने ऽ
(प)म (प)म प प	नि नि सां -	- नि॒ प प	म ध पध मप
झू ठी ज ग	प ति यां ऽ	ऽ ये ही स	ब न कीऽ ऽऽ
०	३	×	२

अंतरा

, नि़सा रे म	प - प प	म प नि॒ प	नि - सां -
अप ने खु	शा ऽ म द	बा ऽ रा ऽ	की ऽ जे ऽ
नि॒ -प - म	रे रे सा -	(नि)सा नि़ सा रे	म - प -
नि ऽरं ऽ का	ऽ र को ऽ	ही ऽ प ह	चा ऽ ने ऽ
म प नि सां	रें मं रें सां	- नि॒ प प	म ध पध मप ३९
फ र क त	ब द रा ऽ	ऽ ये ही स	ब न कीऽ ऽऽ
०	३	×	२

३.६.३ राग : लंकदहन सारंग (देसी अंग प्रकार)

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : आरोह में 'ग,ध' तथा अवरोह में 'ध' स्वर वर्जित

जाति : औडव-षाडव

स्वर : गंधार कोमल तथा दोनों निषाद बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : दोपहर

आरोह : सा, रेम, रेप, नि सां

अवरोह : सां, नि प, म, रे ग रे सा

पकड़ : रे, मप, निप, रेगरेसा, रेऩि, सा

विशेषता : इस राग के दो प्रकार हैं | प्रथम प्रकार है, वह सारंग तथा कान्हड़ा के संयोग वाला औडव-संपूर्ण जाति का है, जिसके आरोह में गंधार धैवत वर्ज्य है | गंधार कोमल तथा दोनों निषाद लगते है | आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद 'नि प' संगती द्वारा दिखाया जाता है| जिसका आरोह-अवरोह स्वरुप इस प्रकार है; सारे, मप, निसां-सां निधनिप, मप, ग, मरे, पमरे, ऩि, सा | यह एक सारंग का अल्पप्रचलित प्रकार है |

दुसरा जो प्रकार है उसमें सारंग तथा देसी राग का मिश्रण है | जो काफी प्रचार में है | इस दुसरे प्रकार में आरोह में 'ग ध' तथा अवरोह में 'ध' वर्ज्य है | मतलब की औडव-षाडव जाती का राग है | इस राग में कोमल निषाद आरोह-अवरोह दोनों में प्रयुक्त होता है; तथा शुद्ध निषाद

फ़क्त आरोह में बीच-बीच में लिया जाता है | इस राग में आरोह तथा उत्तरांग में सारंग एवं पूर्वांग में 'प रेग़रे सा', 'पम रेग़रे सा' इस प्रकार देसी का अंग आता रहता है | 'रेप, रेग़रेसा, रेग़सारेऩि़सा' यह देसी राग की स्वरसंगातियाँ, सारंग अंग के साथ आती रहती है |[४०] कर्नाटक पद्धति में 'मनिरंगु' नामक एक राग है; जिसकी जाति औडव-षाडव है, जिसके आरोह-अवरोह दोनों में कोमल निषाद का प्रयोग होता है इस राग का आरोह-अवरोह इस प्रकार है - 'सा रि म प ऩि सां | सां ऩि प म ग़ - रि सा' जो लंक दहन सारंग से भिन्न है |इस राग की पारम्पारिक रचनाओं में विलंबित एकताल में निबद्ध 'हे लाल मेरे महल चढ़ आवो' इत्यादि देखने को मिलती है |[४१]

स्वर विस्तार : सा ऩि़- सा, रे-, सारे-, ऩि़-, सा -, ऩि़ प़, म़ प़, ऩि़, सा-, रे प, रेग़रे, सा-, ऩि़, सा, रे, म प, नि, सां, ऩि प, ऩिमप, म, रेग़रे, सा रे ऩि़ सा, ऩि़प़, ऩि़, सा-, रेऩि़, सा | रे, मप, ऩिप, निसां, पनीसां, ऩिप, मपनिसां, रें, ग़ं रें सां ऩिप मप रे ग़ रे सा |[४२]

राग : लंकदहन सारंग- एकताल (मध्यलय) (दुसरा प्रकार)

स्थायी

रे म	प नि॒	म प	रे ग॒	रे रे	नि़॒ सा
साँ व	ली सू	र त	मो ह	ली मू	र त
×	०	२	०	३	४
रे म	प मप	निसां सां	रे ग॒	सा रे	नि़॒ सा
हा र	त चैऽ	ऽऽ न	क छु	न सो	ह त
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म -	प प	नि॒ प	नि सां	नि सां	सां सां
सु ऽ	र ब्र	ऽ ह्म	ता ऽ	न क	र त
×	०	२	०	३	४
नि सां	रें गं॒	रें सां	रें नि॒	सां प	नि॒ प
पै ऽ	ज न	प ग	छ न	न ब	ज त
×	०	२	०	३	४
सां -	नि॒ प	रे रे	रे ग॒	सा रे	नि़॒ सा [४३]
मो ऽ	ह त	म न	स क	ल ज	ग त

३.६.४ राग : पटमल्हार

थाट : काफ़ी

वर्ज्य स्वर : गंधार स्वर आरोह-अवरोह में तथा आरोह में धैवत स्वर

जाति : औडव-षाडव

स्वर : निषाद स्वर कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : सा

संवादी : प

गायन समय : वर्षा ऋतू

आरोह : सा, रेम, रेप, नि॒ , सां

अवरोह : सां नि॒ प, ध प, म, रे, नि़॒ रे, सा

पकड़ : म, रेप, नि॒ मप, सां, धप, मप, रेम, नि़॒ रे, सा

विशेषता : यह एक मल्हार का अप्रचलित प्रकार है | इस राग को मेघ मल्हार से भिन्न रखने के लिए बीच-बीच में अवरोह में 'सां ध प, ध प, ध म प' इस तरह धैवत का प्रयोग किया जाता है | इस राग में निषाद के साथ धैवत का सीधा प्रयोग कभी नहीं किया जाता है, मतलब 'सां नि॒ ध प, नि॒ ध प' इस तरह धैवत का प्रयोग नहीं होता | इस राग का चलन मेघ मल्हार की तरह सारंग अंग से थोड़ा वक्र रूप से किया जाता है | इस राग का राग-वाचक स्वर समूह इस प्रकार है - सा, नि़॒ सा, नि़॒ रे, सा, म, रेप, नि॒ म प, सां, ध प, मप, रे म, रे, नि़॒ रे, सा | इस राग में 'रे प' की स्वर संगती का प्रयोग होता है |

स्वर विस्तार :- सा-, नि़॒सा-, नि़॒रे-, सा-, नि़॒प़-, सा-, म, रेम-, रेप-, नि॒, प, नि॒ म प, नि॒ सां-, नि॒ म प, ध-प-, रेम-, रेप-, मप-,नि॒ सां, रें-, सां-, नि॒ सां-, ध प-, म प, रे म, नि़॒रे-, सा |[४४]

राग पटमल्हार-त्रिताल (सरगम गीत)

स्थायी

प रे - म	- रे नि़॒ सा	(नि॒)सां - नि॒ प	म रे नि़॒ सा
नि़॒ प़ सा सा	ध प म प	म - रे सा	रे नि़॒ सा -
०	३	×	२

अंतरा

म म रे प	प नि॒ (नि॒)म प	(नि॒)सां नि॒ सां सां	रें नि॒ सां सां[४५]
ध प म प	म म रे सा	म प रे म	रे नि़॒ रे सा
०	३	×	२

३.६.५ राग : सुजानी मल्हार

थाट : काफी

वर्ज्य स्वर : आरोह में गंधार-धैवत तथा अवरोह में गंधार

जाति : औडव-षाडव

स्वर : निषाद कोमल तथा बाकी सब शुद्ध

वादी : रे

संवादी : प

गायन समय : वर्षाऋत (रात्रि का दूसरा प्रहर)

आरोह : सा, म रे, [म]रे प, म प, नि॒ प, नि॒ सां

अवरोह : सां नि॒ ध म रे, [म]रे नि॒ ध म रे, [म]रे प म रे नि़॒ नि़॒ सा

पकड़ : [म]रे- [म]रे- म रे-, (सा) नि़॒ ध़ म़ प़-, नि़॒ प़ सा

विशेषता : इस राग में मेघ तथा सुरमल्हार का मिश्रण है |

स्वर विस्तार: मरे– नि़॒सा- नि़॒सा म रे-, मरे रे म- रेमपम रे रे नि़॒ नि़॒ सा । मरे- म- मप- मरे --,[म]रे पम- प - - म रे नि़॒ ध़ म़ प़ -,नि़॒सरे–सा, रेरेसानि़॒सारे - रे नि़॒ सा, रेम - मपमम म - रे रे, [म]रे रे प, मप म रे नि़॒ सा । म - मप --- (प) म रे-, नि़॒सा मरे प - म रे [म]रे - रेम रे नि़॒ नि़॒ सा, [म]रे [म]रे म -- मप (प) म रे-, रेम - मनि॒ ध म रे, रेम रे नि़॒नि़॒ सारे रेम नि़॒ नि़॒ सा । म प नि॒ प -,[सां]नि॒ सां -, रेंरेंसांनि॒सारें - नि॒नी॒ सां -,रें रें सां - [प]नि॒ प-, [म]रे रे प - - मप, नि॒ ध-- म- रे, [म]रे रे [म]नि॒ ध म रे, [म]रे [म]रे प (प) म रे नि़॒ नि़॒ सा ।[४६]

राग : सुजानी मल्हार

स्थायी : रुम झूम आये बादल, बरसाये सागर जल थल ।

अन्तरा : ऋत नवेली अलबेली आई, सखियाँ मिल मंगल गाये, दर्पण अब हम सो आमिल ।।

स्थायी

रेम पम रे सा	- नि॒ - प़	रे रे प -	म प म रे
रुऽ ऽऽ ऽ म	ऽ झू ऽ म	आ ऽ ये ऽ	बा ऽ द ल
नि॒ ध ध म	- रे रे नि॒	ध म रे प	रे रे नि॒ सा
ब ऽ र सा	ऽ ये सा ऽ	ऽ ग ऽ र	ज ल थ ल
०	३	x	२

अन्तरा

म म म प	नि॒ प नि॒ प	सां - सां -	नि॒ नि॒ सां -
ऋ त न वे	ऽ ली अ ल	बे ऽ ली ऽ	आ ऽ ई ऽ
नि॒ सां सां रें	- सां नि॒सां रेंसां	नि॒ ध म म	रे रे प -
स खि याँ मि	ऽ ल मंऽ ऽऽ	ग ऽ ऽ ल	गा ऽ ये -
नि॒ नि॒ नि॒ नि॒	नि॒ नि॒ सा सा	रे म प मरे	रे - नि॒ सा [४७]
द र प न	अ ब ह म	सो ऽ ऽ ऽऽ	आ ऽ मि ल
०	३	x	२

३.७ आसावरी थाट के औडव-षाडव जाति के राग ।

३.७.१ राग : सलोना

थाट : आसावरी

वर्ज्य स्वर : पंचम वर्जित तथा आरोह में ऋषभ वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : गंधार, धैवत तथा निषाद स्वर कोमल

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : दिन का तीसरा प्रहर

आरोह : सा ग म ध नि सां

अवरोह : सां नि ध म ग रे सा

पकड़ : म ग रे सा, सा नि़ ध़ म ध़ नि़ सा, ग म ग रे सा

विशेषता : इस राग के समीप मालकौंस राग है । ऐसा प्रतीत होता है की राग मालकौंस के अवरोह में ऋषभ का प्रयोग करके इस राग की संकल्पना की गई है । इस राग का चलन मन्द्र तथा मध्य सप्तक में है|

स्वर विस्तार: सा, सा नि़ ध़, ध़ नि़ सा, सा नि़ ध़ ध़ नि़ ध़ म़, म़ ध़ नि़ सा, ग म ग रे सा, गगरेसानि़ध़नि़सा ग म, ग म ध म, ग म ध नि ध म, मनिधम, धम, धनि, धनि सां, धनि सांगं मं गं रें सां, रेंरें सांनि सां, नि ध म, सां नि ध म, ध म, म ग, सा म, गम, ग रे सा, सा नि़ ध़ नि़ सा।[४८]

राग : सलोना - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : तोरी साँवरी सूरत मोरे मन बस गई। का जानू का जादू किन्हों मोपे।।

अंतरा : जो तोको पल भर न निहारुँ। दिखत जग अंधियारों मोहे।।

स्थायी

			ध़ नि़
			तो री
सा म ग॒ म	ग॒ रे सा सा	ध़ नि़ सा सा	सा सा नि़ सा
साँ व री सू	र त मो रे	म न ब स	ग ई का ऽ
०	३	×	२
म ग॒ म -	ध॒ म मध॒ नि॒सां	सांनि॒ ध॒म ग॒म ग॒रे	सासा नि़सा ध़ नि़
जा ऽ नू ऽ	का ऽ जाऽ ऽऽ	दूऽ ऽऽ कीऽ न्होंऽ	मोऽ ऽपे तो री
०	३	×	२

अंतरा

म ग॒ म -	ध॒ - नि॒ नि॒	सां सां सां सां	सां नि॒ सां -
जो ऽ तो ऽ	को ऽ प ल	भ र न नि	हा ऽ रुँ ऽ
२	०	३	×
मं ग॒ं मं ग॒ं	रें रें सां सां	ध॒नि॒ सांग॒ं मंग॒ं रेंसां	सांनि॒ ध॒म ग॒म ग॒रे
दि ऽ ख त	ज ग अं धि	याऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	रोंऽ ऽऽ मोऽ ऽऽ
२	०	३	×
सासा नि़सा ध़ नि़ [४९]			
हेऽ ऽऽ तो री			
२			

३.८ भैरवी थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.८.१ राग : पंचमकंस/ पंचम मालकंस

थाट : भैरवी

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, पंचम तथा अवरोह में ऋषभ वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : गंधार,धैवत तथा निषाद कोमल

वादी : म

संवादी : सा

गायन समय : दिनका दूसरा प्रहर

आरोह : सा ग म धु नि सां

अवरोह : सां नि धु म प म ग सा

पकड़ : ग म धु म प म ग सा ग म धु प म

विशेषता : यह एक अप्रचलित मधुर राग है | इस राग का संम्पूर्ण चलन तथा नियम मालकौंस के ही है | इस राग की रचना मालकौंस के अवरोह में पंचम स्वर को रखने से होती है |[५०] अवरोह में पंचम साधारणत: 'सां नि धु म प, म ग सा' इस ढ़ंग से लगता है | इसके अतिरिक्त 'सा ग म धु प म', 'सा ग म ग प म', 'धु म प म' इत्यादि अवरोहात्मक ढ़ंग से पंचम का प्रयोग किया जाता है | इसके समीप के रागों में 'गोपिका बसंत' तथा 'सम्पूर्ण मालकौंस' है | यह एक श्रुति मनोहर राग है |[५१]

राग : पंचमकंस – त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : ऐसे प्रभु अनाथ के स्वामी । कहियत दीनदास पर पीरक सब घट अन्तरयामी ।
अंतरा : करत बिवस्र द्रुपद तनयाको 'सरन' शब्द कहि आयो, पूर्ण अनन्त कोटि परिबसननि, अरिको गरब गँवायो। कवि-सूरदास

स्थायी

ध॒नि॒
ऐऽ

सा ध॒ नि॒ ध॒	म - - प	म - ग॒ सा	ग॒ म ग॒ सा
ऽ से ऽ प्र	भु ऽ ऽ अ	ना ऽ थ के	स्वा ऽ मी ऽ
३	×	२	०
नि़ नि़ सा सा	ग॒ - म मध॒	नि॒ ध॒ प म	ग॒ म ग॒ सा
क हि य त	दी ऽ न दाऽ	ऽ स प र	पी ऽ र क
३	×	२	०
ग॒ म ध॒ नि॒	सां गं॒ सां नि॒	ध॒नि॒ सांनि॒ ध॒म	ग॒म पम ग॒सा , सां
स ब घ ट	अ ऽ न्त र	याऽ ऽऽ मीऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ , ऐ
३	×	२	०

अंतरा

ग॒ ग॒ म म	ध॒ - नि॒ सां	सां सां सां सां	नि॒ - सां -
क र त बि	व ऽ स्र द्रु	प द त न	या ऽ को ऽ
×	२	०	३
नि॒ नि॒ सां मंगं॒	मं गं॒ सां सां	नि॒ - सां -	नि॒ गं॒सां नि॒ध॒ -
स र न श	ऽ ब्द क हि	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ यो ऽ
×	२	०	३
गं॒ - सां सां	नि॒ध॒ - म नि॒ध॒	नि॒ ध॒ म ग॒	प म ग॒ सा
पू ऽ र्ण अ	न ऽ न्त को	ऽ टि प रि	ब स न नि
×	२	०	३
नि़ सा ग॒ म	ध॒ नि॒ सां गं॒गं॒	सांनि॒ ध॒म ग॒म ध॒नि॒ [५२]	
अ रि को ऽ	ग॒ र ब गँऽ	वाऽ ऽऽ योऽ ऐऽ	
×	२	०	

३.९ तोड़ी थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.९.१ राग : श्रीवंती

थाट : तोड़ी

वर्ज्य स्वर : आरोह में रिषभ, धैवत तथा अवरोह में धैवत

जाति : औडव-षाडव

स्वर : रे ग स्वर कोमल तथा मध्यम तीव्र

वादी : प

संवादी : सा

गायन समय : दिन का तीसरा प्रहर

आरोह : सा ग मं प नि सां

अवरोह : सां नि प मं ग रे सा

पकड़ : ऩि सा ग मं प, ग मं प नि प, मं प ग रे सा ।अथवा ऩि सा मं ग, प ग रे सा

विशेषता : ऐसा प्रतीत होता है की राग मुल्तानी के अवरोह में धैवत वर्ज्य करने से इस राग के स्वर सामने आते हैं; इस राग के वादी-संवादी कोई 'प रे' मानते हैं ।[५३] इस जगह वादी 'प' तथा संवादी 'सा' मानना उचित होगा | इस राग की रचना में, 'साजनवा न आये -त्रिताल - (ख.ब. कुन्टे)' तथा 'सैंया नाही आये - एकताल विलंबित है (ख.ब. कुन्टे)' है |[५४]

स्वर विस्तार : सा ऩि प़, म़ं प़ ऩि सा, ऩि सा ग रे सा, ऩि सा ग मं प , मं प ग, ग मं प नि प, मं प ग रे सा, ऩिसा गग रेरे सा ऩिसा गमं प, ग मं प नि सां नि प मं ग, मं प मं ग, मं ग रे सा ।

प म॑ पग॒ म॑ प नि सां, नि सां गं॒ रें॒ सां, नि सां म॑ गं॒ रें॒ सां, रें॒रें॒ सांनि सां रें॒सां नि - प, प म॑ प ग॒ म॑ प नि प, सां नि प, म॑ ग॒, ग॒ म॑ ग॒म॑ प म॑ ग॒, ऩि सा म॑ ग॒, प म॑ ग॒, म॑ ग॒ रे॒ सा ।[५५]

राग : श्रीवंती - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : एक घड़ी परत ना चैन पिया के दरस बिन |
अंतरा : आवन कहे गये, आये अजहूँ न, नित जाय बसत घर सौतन ||

स्थायी

			प
			ए
ग॒ रे॒ सा -	ऩि सा म॑ ग॒	प - प -	ग॒म॑ ग॒म॑ प -
क घ ड़ी ऽ	प ऽ र ऽ	त ऽ ना ऽ	चैऽ ऽऽ न ऽ
०	३	×	२
ग॒ म॑ प नि	सां नि प प	ग॒ म॑ प म॑	ग॒ रे॒ सा प
पि ऽ या ऽ	के द र स	बि ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ए
०	३	×	२

अंतरा

ग॒ म॑ प नि	सां नि सां सां	नि सां ग॒ं रे॒ं	सां नि सां सां
आ ऽ व न	क हे ग ये	आ ये अ ज	हूँ ऽ न ऽ
०	३	×	२
नि सां ग॒ं रे॒ं	सां नि प प	ग॒ म॑ प म॑	ग॒ रे॒ सा प ५६
नि त जा ऽ	य ब स त	घ र सौ ऽ	त ऽ न ए
०	३	×	२

३.१० मिश्र थाट के औडव-षाडव जाति के राग |

३.१०.१ राग : वियोगवराळी

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : आरोह में गंधार तथा पंचम एवं अवरोह में पंचम

जाति : औडव-षाडव

स्वर : रे ग ध स्वर कोमल

वादी : ध

संवादी : रे

गायन समय : दिन का दूसरा प्रहर

आरोह : सा, रे म, ध नि, सां

अवरोह : सां, नि ध, म, रे ग रे सा

पकड़ : सा रे म, ध नि ध म, रे ग रे सा

विशेषता : इस राग की संकल्पना (रचना) आचार्य श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर 'सुजान' जी की है | इस राग को कर्णाटक पद्धति के 'धेनुका' मेल से इसकी संकल्पना की गई है | इस राग के आरोह में गंधार और पंचम तथा अवरोह पंचम वर्ज्य है | इस राग में अवरोह में गंधार का प्रयोग 'म, रे ग रे सा' इस तरह होता है; 'म ग रे सा' इस प्रकार सीधा प्रयोग नहीं होता है ।

स्वर विस्तार : सा ध़ म़, ध़ नि़, ध़ नि़ सा, सा रे ग रे सा । सा रे म ध, नि ध, ध नि सां, नि ध, ध नि सां, रें गं, रें सां, सां नि ध, म, म ध नि ध म, रे ग, रे सा |

म ध नि सां, ध नि सां रें गं, रें गं, रें सां, रेंरें सां निसां निध ,ध नि सां, निध म ध नि सां, रें मं, रें गं, रें सां, रेंरें सां निसां रेंसां नि ध, म,ध नि ध, म, रे ग, रे सा |[५७]

राग : वियोगवराळी

स्थायी : जिया नाही लागे मोरा उन बिन, कब घर आवे मोरा पियरवा |
अंतरा : राह तकत अंधियारी बीती कौन उपाय करे मन अब नाही मानत एक घड़ी पल छीन ||

स्थायी

			ध
			जि
म रे ग रे	सा - म धनि	सां ध म रे	ग रे सा रे
या ना ऽ हीं	ला ऽ गे ऽऽ	ऽ मो रा उ	न बि न क
ग रे सा सा	रे म धनि सांरें	गं रें सां रे	ग रे सा ध
ब घ र आ	ऽ वे मोऽ ऽऽ	ऽ रा पि य	र वा ऽ जि

अंतरा

म ध नि सां	सां सां रें सां	सां रें गं रें	रें सां सां नि
रा ऽ ह त	क त अं धि	या ऽ री ऽ	बी ऽ ती कौ
ध ध म -	म रे ग रे	सा - सा सा	ध नि सा रे
न उ पा ऽ	य क रे म	न ऽ अ ब	ना ऽ ही मा
म ध नि सां	- रें गं रें	सां ध नि ध	म - म ध ५८
S न त ऽ	ऽ ए क घ	ड़ी प ऽ ल	छी ऽ न जि
३	×	२	०

३.१०.२ राग : दयावती

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, मध्यम तथा अवरोह में मध्यम वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : रिषभ तथा निषाद कोमल तथा बाकी सब शुद्ध

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : रात्री का दूसरा प्रहर

आरोह : सा ग प ध नि॒ सां

अवरोह : सां, नि॒ ध, प, ग प, ग रे॒ सा

पकड़ : ग प ध नि॒ ध प ग प ग रे॒ सा

विशेषता : राग कलावती के अवरोह में कोमल रिषभ का प्रयोग करने से इस राग का स्वरुप सामने आता है। शेष सभी बाते नियम कलावती के ही हैं। "रें॒ सां नि॒ ध प ध नि॒ सां" तथा क्वचित "ध़ नि़॒ रे॒ सा" स्वर समूह से अहीर भैरव का भास होता है; परन्तु कलावती की 'ग प ध नि॒' तथा 'नि॒ ध प ग' इत्यादि स्वरावालियाँ से यह भास दूर होता है |

स्वर विस्तार :

नि़॒ सा ग प ग रे॒ सा । सा ग प धनि॒ ध प ग प ग रे॒ सा । सा नि़॒ ध़ प़, प़ ध़ नि़॒ सा नि़॒ रे॒ सा । ग रे॒ सा, नि॒ ध प ग प ग रे॒ सा । ग प ध नि॒ ध सां, नि॒ रें॒ सां, ग रें॒ सां, नि॒ सां गं पं गं रें॒ सां, रें॒ सां नि॒ ध प ध नि॒ सां, सां नि॒ ध प , गप धनि॒ ध प , ग प ग रे॒ सा।[५९]

राग : दयावती – झपताल

स्थायी : स्वर दे श्री शारदे, साम गायन रते, मंगल करि मातु, वागथि, वरदे|

अंतरा : जय वर्णमालिनी, वीणा सुवादिनी, मम् हृदय भक्ति तव भारती, भरदे ||

स्थायी

सा	ग	प	-ध	नि॒	ध	प	ग	रे॒	सा
स्व	र	दे	ऽऽ	श्री	शा	ऽ	र	दे	ऽ
सा	नि़॒	ध़	प़	ध़	नि़॒	रे॒	रे॒	सा	-
सा	ऽ	म	गा	ऽ	य	न	र	ते	ऽ
नि़॒	सा	ग	ग	सा	ग	प	प	-	ध
मं	ऽ	ग	ल	क	री	ऽ	मा	ऽ	तु
सां	नि॒	ध	प	ग	प	ग	रे॒	सा	-
वा	ऽ	ग	थि	ऽ	व	र	दे	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

अंतरा

ग	पध	नि॒	-	ध	[सां]नि॒	सां	सां	सां	-
ज	यऽ	व	ऽ	र्ण	मा	ऽ	लि	नी	ऽ
[सां]नि॒	सां	गं	-	पं	गं	रें॒	रें॒	सां	-
वी	ऽ	णा	ऽ	सु	वा	ऽ	दि	नी	ऽ
रें॒	सां	[नि॒]सां	नि॒	ध	प	-	ध	[सां]नि॒	सां
म	म	हृ	द	य	भ	ऽ	क्ति	त	व
सां	नि॒	ध	प	ग	प	ग	रे॒	सा	-[६०]
भा	ऽ	र	ती	ऽ	भ	र	दे	ऽ	ऽ
×		२			०		३		

३.१०.३ राग : कलावर्धिनी

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : आरोह में ऋषभ, मध्यम तथा अवरोह में मध्यम वर्ज्य

जाति : औडव-षाडव

स्वर : आरोह-अवरोह में निषाद कोमल तथा आरोह गंधार शुद्ध तथा अवरोह में गंधार कोमल बाकी शुद्ध

वादी : ग

संवादी : ध

गायन समय : सायंकाल

आरोह : सा ग प ध नि॒ ध सां

अवरोह : सां, नि॒ ध, प, ग॒ रे सा

पकड़ : ग प ध नि॒ ध प ग॒- रे सा

विशेषता : राग कलावती के अवरोह में कोमल गंधार तथा शुद्ध रिषभ का प्रयोग करने से इस राग का स्वरुप सामने आता है। शेष सभी बातें कलावती की ही है।

स्वर विस्तार :

नि॒ सा ग प धप ग॒ - रेसा रे सा। सा नि॒ ध़ प़, प़ ध़ नि॒ - ध सा, नि॒ सा साग॒ रे सा । नि॒ सा ग सा ग प गप धनि॒धप ग॒ रेसा रे - सा । रेरेसानि॒सा ग पपगसाग प धधपगप धनि॒धप ग॒ रेसा रे - सा। नि॒ सा साग॒ रेरेसानि॒सा ग सा पग प, प ग सागप धनि॒-धप ग॒ रेसा रे - सा । साग॒ग॒रेसा नि॒ सा पग प, गप पग॒रेसा नि॒ सा पग प, धपगप धनि॒-धप ग॒ रेसा रे - सा । नि॒

सा साग गप पध धनि॒ - ध सां, धप ग॒ - रेसा ग - पध [सां]नि॒ - ध सां, गप पग॒रेसा नि़॒सागप धनि॒-ध सां, नि॒ सां गं॒ रें - सां, नि॒ सां गं, नि॒ सां गं॒ रेंसां रें - सां, सां नि॒ ध प, ग प ध नि॒ सां नि॒ ध प, नि॒ ध प धप ग॒ रेसा रे - सा।[६१]

राग : कलावर्धिनी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : अब खेलन लागे कन्हाई, हिय हुलस निरखत जसुमति माई।
अंतरा : मुख देखे चंद छबि लाजे, मधु मंद करधनी बाजे, नर चरित करत प्रभु 'भाव' मगन गंधर्व सिद्ध सोइ गाई ।

स्थायी

			गप पध
			अऽ बऽ
नि -ध - प	ग -रे - सा	रे - - -	सा रे नि नि
खे ऽल ऽ न	ला ऽगे ऽ क	न्हा ऽ ऽ ऽ	ई, हि य हु
०	३	×	२
सा -ग - सा	$^{\text{प}}$ग प ग प	ध $^{\text{सां}}$नि ध सांनि	सांनि धप गप पध
ल ऽस ऽ नि	र ख त ज	सु म ति माऽ	ऽऽ ईऽ अऽ बऽ
०	३	×	२
नि -ध - प	ग - रे सा	**अंतरा**	सां रें
खे ऽल ऽ न	ला ऽगे ऽ क		मु ख
०	३		
नि -ध प ग	प ध $^{\text{सां}}$नि ध	सां - - -	सां - नि नि
दे ऽखे ऽ चं	ऽ द छ बि	ला ऽ ऽ ऽ	जे ऽ म धु
०	३	×	२
$^{\text{रें}}$सां गं गं रें	सां रें नि ध	सां - - -	सां - सां नि
मं ऽ द क	र ध नी ऽ	बा ऽ ऽ ऽ	जे ऽ न र
०	३	×	२
सां गं गं पं	गं सां नि $^{\text{प}}$नि	सां रेंसां नि सांनि	ध प सा -
च रि त क	र त प्र भु	भा ऽऽ व मऽ	ग न गं ऽ
०	३	×	२
$^{\text{प}}$ग प ग प	ध प ध $^{\text{सां}}$नि	ध $^{\text{सां}}$नि सां धनि	सांनि धप ६२
ध ऽ र्व सि	ऽ द्ध सो ऽ	इ गा ऽ ऽऽ	ऽऽ ईऽ
०	३	×	२

३.१०.४ राग : पुष्पांगी

थाट : मिश्र

वर्ज्य स्वर : आरोह में मध्यम तथा निषाद एवं अवरोह में मध्यम

जाति : औडव-षाडव

स्वर : गंधार स्वर कोमल बाकी सब शुद्ध

वादी : प

संवादी : रे

गायन समय : मध्यरात्री

आरोह : सा रे ग प ध सां

अवरोह : सां नि ध प ग रे सा

पकड़ : सा रे ग प ध सां नि ध प ग रे सा

विशेषता : इस राग में शिवरंजनी के ही स्वर है। शिवरंजनी के अवरोह में निषाद का प्रयोग करने से इस राग की संकल्पना की गई है।

स्वर विस्तार: सा, सारे, गरे, गरेसा, सारेससा ऩि ध़ प़, प़ध़, सा। सा ऩि ध़ प़, ध़ सा रे ग रे, ग रे, ग प ग रे, गरे साऩि ध़प़, प़ध़, प़ध़ सा। सारेगप, रेगप, गप धप, गरे गप, धसारेगरे, गप, प, गपगरे, गप, गप,गपध, पधपगरे, गप, धप, गपधसां, धसां, धसांरेंसां, सारेंसांसां, नि ध प, पधपप गरे, गपधसां, धसांरेंगंरेंसां, सारेंसांसां नि ध प, गप धध प ग रे, ग रे सा।[६३]

राग : पुष्पांगी - त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी : आवो पिया मोरे मंदिरवा, बहुत दिन बीते जिया डर पावे।

अंतरा : अबलो न आये सुध बिसराए , दरस बिन नित सब दुःख पावे।

स्थायी

			सांनि
			आऽ
धप <u>ग</u><u>ग</u> रेसा रे	<u>ग</u> - - प	<u>ग</u> - रे सा	रे रे सा सा
वोऽ ऽऽ ऽऽ पि	या ऽ ऽ मो	रे ऽ मं ऽ	दि र वा ब
३	×	२	०
रे <u>ग</u> प प	ध -प प	ध सां रें सां	सांनि धप <u>ग</u>रे सांनि
हु त दि न	बी ऽ ते जि	या ऽ ड र	पाऽ ऽऽ वेऽ आऽ
३	×	२	०

अंतरा

<u>ग</u> प ध प	ध सां सां सां	ध सां रें <u>गं</u>	रें - सां -
अ ब लो न	आ ऽ ये सु	ध ऽ बि स	रा ऽ ए ऽ
३	×	२	०
रें <u>गं</u> रें सां	नि ध प प	<u>ग</u> <u>ग</u> रे सा	रे <u>ग</u> पध सांनि[६४]
द र स बि	न ऽ नि त	स ब दुः ख	पा ऽ वेऽ आऽ
३	×	२	०

संदर्भ – तृतीय अध्याय

१. राग - भिन्न रागेश्री
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/BhinnaRageshri_RasiklalAndharia.mp3

२. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२७ से २८ |

३. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 14 |

४. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. २८ |

५. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ३० |

६. राग - भूपनट
https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/BhoopNata_ChhoteGandharva.mp3

७. आठवले, वि. रा. (२००८, ऑगस्ट). नादवैभव. (प्रथम आवृत्ती.). प्रसाद कुलकर्णी, मुंबई. पृ.११९ |

८. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार, द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १३९ से १४३|

९. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि. (भाग तिन). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १ से ८ |

१०. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३८ |

११. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग), (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.२४ |

१२. भातखंडे, वि. (१९९९, जनवरी). हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति क्रमिक पुस्तक-मलिका. (पाँचवी पुस्तक). (हिन्दी संस्करण.). संपादक - गर्ग लक्ष्मीनारायण, प्रकाशक - संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२९५ |

१३. पत्की, ज. दे. (१९६५, मई). अप्रकाशित राग. (तीसरा भाग). (तृतीय संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस उत्तर प्रदेश. पृ.३८ से ३९ |

१४. रचनाकार : पं. शिवकुमार शुक्ल (भेंडीबझार घराना), प्रो. ईश्वरचंद्र पंडित सर से प्राप्त |

१५. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. १९ |

१६. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि. (भाग तिन). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ.१२२ |

१७. राजा नवाब अली. (१९५०, जून). मारिफुन्नग़मात. (प्रथम भाग). (प्रथम संस्करण.). गर्ग प्रभुलाल, संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.१६४ |

१८. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 246 |

१९. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. १९ |

२०. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. २१ |

२१. राग - प्रतापवराली https://youtu.be/h5PACgDQGws

रचनाकार : पं. मास्टर नवरंग (भेंडीबाज़ार घराना) |

२२. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३९१ से ३९२ |

२३. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.३९५ |

२४. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२३५ |

२५. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 12.

२६. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२३५ से २३६ |

२७. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.२३७ |

२८. शाह, ज. त्रि. (१९९१, मार्च). भैरव के प्रकार. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - गिण्डे के. जी., प्रकाशक - संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ.४०३ से ४०४ |

२९. राग - भवमत भैरव : https://youtu.be/47JOEjBjfq0 गायक: पं. कुमार गन्धर्व |

३०. पत्की, ज. दे. (१९८२, जुलाई). अप्रकाशित राग. (प्रथम भाग). (सातवा संस्करण.). संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश. पृ. ६६ |

३१. हीराणी, चंद्रकांत. (२००८). अप्रचलित राग. (प्रथम संस्करण.). शर्मा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर. पृ. ९९ |

३२. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४६ |

३३. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ४८ |

३४. आठवले, वि. रा. (२००८, ऑगस्ट). नादवैभव. (प्रथम आवृत्ती.). प्रसाद कुलकर्णी, संस्कार प्रकाशन, अभ्युदयनगर, मुंबई. पृ.९१ |

३५. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. ५५ |

३६. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 58 |

३७. झा, रामाश्रय. (१९९१). अभिनव गीतांजलि. (भाग तिन). (तृतीय संकरण.). संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद. पृ. १७५ से १७६|

३८. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. ५५ से ५६ |

३९. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. ६३ से ६४ |

४०. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. ८७ और ९३|

४१. RAO, B. SUBBA. (1965). RAGANIDHI. (VOLUME THREE). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 88.

४२. शाह, ज. त्रि. (२०००, जनवरी). सारंग के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. ९३ |

४३. राग - लंकदहन सारंग : https://youtu.be/INDvIxZlRgU गायक : विदुषि श्रुति सडोलिकर

४४. शाह, ज. त्रि. (१९९१). मल्हार के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९२ से १९३ |

४५. शाह, ज. त्रि. (१९९१). मल्हार के प्रकार. (द्वितीय संस्करण.). शाह परिवार द्वारा शाह वीणा देवेन्द्र, अंधेरी, मुंबई. पृ. १९४ |

४६. राग - सुजानी मल्हार : https://oceanofragas.com/pgRagDetailFormWithListen.aspx?name=songs/SujaniMalhar_YHKhan.mp3

४७. राग - सुजानी मल्हार : https://youtu.be/bqUH8Ha3A9Y

४८. जोशी, भो. द. (१९९४). संगीत शास्त्र तथा राग-माला. (प्रथम संस्करण.). सम्पादक - जोशी कुसुम, जोशी हेमा, जोशी हंसा, जोशी भारती, प्रकाशक - जोशी श्रीमती सरोज, सरोज प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. पृ. १८७ |

४९. स्व रचित

५०. पणशीकर, दि. (२०१९). आडाचौताल बंदिशे. (द्वितीयावृत्ती.). प्रसाद कुलकर्णी, संस्कार प्रकाशन, अभ्युदयनगर, मुंबई. पृ. १४४ |

५१. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग), (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन

विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१३४ |

५२. पटवर्धन, वि. (१९८१, अप्रैल). राग विज्ञान. (छठवाँ भाग), (तृतीय संकरण.). संपादक - पटवर्धन नारायण विनायक, पटवर्धन मधुसूदन विनायक. प्रकाशक - पटवर्धन मधुसूदन विनायक, संगीत गौरव ग्रन्थमाला, पुणे. पृ.१३४ से १३५ |

५३. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ७० |

५४. RAO, B. SUBBA. (1966). RAGANIDHI. (VOLUME IV). (FIRST IMPRESSION.). THE MUSIC ACADEMY, MADRAS. PAGE 106 to 107.

५५. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ७० |

५६. कुन्टे, ख. ब. (१९७०, जून). अभिनव राग दर्पण. (प्रथम भाग). पृ. ७२ |

५७. रातंजनकर, एस. एन. (१९९४). अभीनव गीत मंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य, एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन दादर, बम्बई. पृ. १९४ से १९५ |

५८. रातंजनकर, एस. एन. (१९९४). अभीनव गीत मंजरी. (तृतीय भाग). (द्वितीय संस्करण.). आचार्य, एस. एन. रातंजनकर फाऊण्डेशन दादर, बम्बई. पृ.१९६ |

५९. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय. (१९७४, मई). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग). पृ. २४७ |

६०. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय. (१९७४, मई). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग). पृ. २४८ से २४९ |

६१. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय. (१९७४, मई). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग). पृ. २४९ से २५० |

६२. भट्ट, बलवंतराय गुलाबराय. (१९७४, मई). भावरंग-लहरी. (द्वितीय भाग). पृ. २५२ से २५३ |

६३. स्व रचित

६४. स्व रचित